Hindi Murli Quiz 22-11-2015

.

Q.1) **Q. वर्तमान समय आत्माओं को सबसे ज्यादा आवश्यकता है-सच्ची शान्ति की। अशान्ति के अनेक कारण दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। अगर स्वयं अशान्त न भी होंगे तो औरों के अशान्ति के वायब्रेशन्स अपने तरफ खीचेंगे और शान्त अवस्था में बैठने नहीं देंगे । इस सन्दर्भ में बापदादा ने बच्चों को जो सेवा दी है, उसको टिक करके स्पष्ट करें ---**

- **A.** ☑ आप सबका विशेष स्वरूप `मास्टर शान्ति के सागर का' इमर्ज होना चाहिए।
- **B.** ☑ शान्ति स्वरूप के चुम्बक बनो, जो दूर से ही अशान्त आत्माओं को खींच सको।
- **C.** ☑ .नयनों द्वारा शान्ति का वरदान दो।
- **D.** ☑ मुख द्वारा शान्ति स्वरूप की स्मृति दिलाओ।
- **E.** ☑ संकल्प द्वारा अशान्ति के संकल्पों को मर्ज कर शान्ति के वायब्रेशन को फैलाओ।

Q.2) **Q. "इस वर्ष में विशेष जो भक्त आपकी महिमा करते हैं- शान्ति देवा, इसी स्वरूप को इमर्ज करो। अभ्यास करो, मुझ आत्मा के शान्त स्वरूप के वायब्रेशन कहाँ तक कार्य करते हैं। शान्ति के वायब्रेशन नजदीक की आत्माओं तक पहुँचते हैं वा दूर तक भी पहुँचते हैं। अशान्त आत्मा के ऊपर अपने शान्ति के वायब्रेशन्स का अनुभव / प्रयोग करके देखो।"**

- **A.** ◉ सही
- **B.** ○ गलत

Q.3) **Q. वाक्यों को उनके अर्थ अनुसार ही जोड़ें ----**

	Choice	Match
A	डबल लाइट समय अनुसार अपने को सरल रीति से चला सकेगा।	वह मन से सदा मग्न अवस्था में रह सकेगा।
B	बाप का स्नेह ही पाँव दबाता है।	स्नेह दूर को नजदीक लाता है।
C	भगवान को मैंने लाया।	ऐसे नशे में रहो तो माया भाग जायेगी।
D	माया को तलाक देना अर्थात्,	संकल्प में भी माया न आवे।

Q.4) **Q. केवल सही वाक्य ही चयन करें ----**

- **A.** ☑ फरिश्ते समान स्थिति बनाने के लिए, अपने को बाप की याद की छत्रछाया के नीचे समझो ।
- **B.** ☑ पुण्य आत्मा संकल्प में भी कोई पाप कर्म नहीं कर सकती और पाप वहाँ होता है जहाँ बाप की याद नहीं होती।।
- **C.** ☑ कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से कोई भी मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा।
- **D.** ☐ देह-अभिमान में आना अर्थात् फरिश्ता बनना। देही- अभिमानी बनना अर्थात मानव बनना।
- **E.** ☑ पाप कर्मों से छुटकारा पाने का साधन है - लाइट हाउस की स्थिति ।

Explanation: ---देह-अभिमान में आना अर्थात् मानव बनना। देही- अभिमानी बनना अर्थात फरिश्ता बनना।

Q.5) **Q. स्वदर्शन चक्रधारी पर आधारित इस एक्सरसाइज में उपयुक्त शब्दों का मैच करके रिक्त स्थान भरें ।**

	Choice	Match
A	स्वदर्शन चक्रधारी बनने वाले ---------और विश्वराज्य के अधिकारी बन जाते हैं ।	स्वराज्य ।
B	स्वदर्शन चक्र चलाते-चलाते कभी स्व के -------परदर्शन चक्र नहीं चलाना ।	बजाय ।
C	जब जिस कर्मेन्द्रिय द्वारा जो कर्म कराने चाहें वह करा सकें, इसको कहा जाता है ----------।	अधिकारी ।
D	राज्य अधिकारी बनने के लिए कन्ट्रोलिंग ------- चाहिए।	पावर ।
E	जब कन्ट्रोलिंग पावर होती है तो कोई भी कर्मेन्द्रिय कभी संकल्प रूप में भी ------नहीं दे सकती।	धोखा ।

Q.6) **Q. सही वाक्य ही चयन / टिक करें ----**

A. ☑ जो कुछ भी ड्रामा में होता है उसमें कल्याण ही है, अगर यह स्मृति में सदा रहे तो कमाई जमा होती रहेगी।
B. ☐ साक्षीपन की सीट शान की सीट है, इस सीट पर बैठने वाले परेशान हो जाते हैं ।
C. ☑ क्यों, क्या का क्वेश्चन समझदार के अन्दर उठ नहीं सकता।
D. ☐ अगर विस्मृति रहे कि यह संगमयुग कल्याणकारी युग है, बाप भी कल्याणकारी है तो श्रेष्ठ स्टेज बनती जायेगी।

Explanation: 1.साक्षीपन की सीट शान की सीट है, इस सीट पर बैठने वाले परेशानी से छूट जाते हैं । 2.अगर स्मृति रहे कि यह संगमयुग कल्याणकारी युग है, बाप भी कल्याणकारी है तो श्रेष्ठ स्टेज बनती जायेगी।

Q.7) **Q. "जब बाप का साथ और हाथ है तो अकल्याण हो नहीं सकता। अभी पेपर बहुत आयेंगे, उसमें क्या-क्यों का क्वेश्चन न उठे। कुछ भी होता है होने दो।। बाप हमारा हम बाप के तो कोई कुछ कर नहीं सकता, इसको कहा जाता है निश्चय बुद्धि। बात बदल जाए लेकिन आप न बदलो - यह है निश्चय।"**

A. ◉ सही
B. ○ गलत

Q.8) **Q. "अब बाप आया है तो बच्चों को तो बढ़ना ही है। ------न हो तो सेवा काहे की। सेवा का अर्थ ही है-------।**

निम्नलिखित विकल्पों में से एक सबसे उपयुक्त शब्द से उपरोक्त दोनों रिक्त स्थान भरें ।

A. ◉ वृद्धि
B. ○ त्याग
C. ○ तपस्या
D. ○ प्रेम

Q.9) **Q. वरदान पर आधारित निम्नलिखित वाक्य सही हैं या गलत हैं-कृपया चयन / टिक करें ।**

"सहन करना मरना नहीं है लेकिन सबके दिलों में स्नेह से जीना है। कैसा भी विरोधी हो, रावण से भी तेज हो, एक बार नहीं 10 बार सहन करना पड़े फिर भी सहनशक्ति का फल अविनाशी और मधुर है। सिर्फ यह भावना नहीं रखो कि मैंने इतना सहन किया तो यह भी कुछ करे। अल्पकाल के फल की भावना नहीं रखो। रहम भाव रखो-यही है सेवा भाव। सेवा भाव वाले सर्व की कमजोरियों को समा लेते हैं। उनका सामना नहीं करते।"

A. ◉ सही
B. ○ गलत

Q.10) **Q. निम्नलिखित रिक्त स्थान भरें ---------**
"जो बीत चुका उसको भूल जाओ, बीती बातों से शिक्षा लेकर आगे के लिए सदा --------- रहो।"

- सावधान
- साव्धान
- सावधन
- सावधां
- साव्धान
- सवधान
- saavdhaan
- savdhan